इच्छा परिमाण और संयम है- आर्थिक समस्याओं का समाधान

- आचार्य महाप्रज्ञ

सापेक्ष अर्थशास्त्र पर चतुर्थ संगो-ठी आयोजित

लाडनूं। 01 नवम्बर।

वर्तमान विकास की अवधारणा गलत है जिसमें पदार्थ विकास प्रमुख हो गया है और मानवीय विकास गौण हो गया है। अर्थशास्त्र के तीन ृाब्द है- अनिवार्यता, आवश्यकता एवं उपभोग। इन तीनों ृाब्दों की परिधि में आर्थिक क्रियाएं संचालित होती है। आज अनिवार्य एवम् आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के स्थान पर विलासिता की वस्तुओं के उत्पादन पर अधिक बल दिया जा रहा है। ऐसी वस्तुएं उत्पादित हो रही है जिनका मूल्य तो अत्यधिक है किन्तु उपयोगिता नहीं है। विकास का यही चक्र यदि चलता रहा तो आने वाले तीन-चार दशकों में पूरे विश्व में अनाज व पानी के लिए संघर्ा होने लगेगा। आचार्य महाप्रज्ञ ये विचार 'सापेक्ष अर्थशास्त्र' पर आयोजित चतुर्थ सम्मेलन में व्यक्त किये। उन्होंने महावीर वाणी को उद्धृत करते हुए कहा कि आदमी जब मूढ़ बन जाता है तो वह सत्य को जानकर भी उसे देख नहीं पाता। मोह के कारण ही आर्थिक जगत में मूल्यों का ह्रास हुआ है। सापेक्ष दृ-िट से विचार करें तो परिमाण व संयम- ये दो ृाब्द सामने आते हैं और इनसे वर्तमान आर्थिक समस्याओं के समाधान पाये जा सकते हैं।

इस सम्मेलन का प्रारम्भ मुनि नीरज के मंगल संगान से हुआ। जैन विश्वभारती के मंत्री भीकमचन्द पुगलिया एवम् प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष ृांतिलाल बरमेचा ने स्वागत भा-ाण प्रस्तुत किया। प्रो. लालचन्द सिंघी ने आचार्य महाप्रज्ञ की सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा को विश्व की आर्थिक समस्याओं के समाधान में एक सशक्त माध्यम बताया। प्रसिद्ध समाज वैज्ञानिक आर.एल. वाजपेयी ने कहा- आज आवश्यकता सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा के प्रयासों को मूर्त रूप देने की है, तभी ृाश्वत समाधान मिल सकता है। प्रो. दयानंद भार्गव ने रा-ट्रीय संवाद में अपने विचारों की अभिव्यक्ति देते हुए कहा- विश्व में एक तरफ अत्यंत भूखमरी की स्थिति है तो दूसरी ओर अति उत्पादन की भी-ाण समस्या है। इस स्थिति को जब धर्मशास्त्र के साथ पढा जाएगा तभी नए मॉडल की प्रस्तुति होगी। प्रो. भार्गव ने कहा कि सुविधाएं विलासिता में परिवर्तित न हों जिससे व्यक्ति का आत्मबल व स्वावलम्बन बना रहे। इस बात को ध्यान में रखा जाए कि गरीबी न हो तो साथ ही असंयम भी न हो। प्रो. भार्गव ने अपने दो शि-यों श्री अनेकान्त जैन व योगेश जैन के संवाद के द्वारा भी धर्मशास्त्र और अर्थशास्त्र के भेद की व्याख्या की। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा श्रीमती कनक बरमेचा ने कहा- आर्थिक तंत्र के तीन स्तम्भ हैं - सरकार, उपभोक्ता व व्यवस्था। इन तीनों के संतुलन से ही अर्थव्यवस्था संतुलित होती है। श्रीमती बरमेचा ने गांवों में अहिंसा प्रशिक्षण के अन्तर्गत किए जा रहे व्यवसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की अवगति दी। प्रसिद्ध आर्थिक विश्ले-ाक एल.एन. नाथूरामका ने कहा कि नॉरमेटिव अर्थशास्त्र के

अन्तर्गत क्या होना चाहिए इस पर चिन्तन किया जाता है। इसी संदर्भ में आचार्य प्रवर की सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा है। यह अवधारणा अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य, करूणा, ुचिता जैसे मानवीय गुणों पर अवलंबित है। अर्थशास्त्र में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रतिस्थापना होने पर ही हम विनाश से बच सकते हैं। प्रो. नाथूरामका ने कहा- विकास के तीन प्रकार हैं- खाऊ, दिखाऊ एवं टिकाऊ। टिकाऊ विकास की स्थिति सापेक्ष अर्थशास्त्र तुल्य हो सकती है। इस संवाद के आयोजक इण्टरनेशनल सेंटर फॉर इकॉनोमिक्स ऑफ नॉनवायलेंस एण्ड सस्टनेबिलिटी के निदेशक प्रो. अशोक बाफना ने इस संवाद की सम्पूर्ण समायोजना पर प्रकाश डाला एवं जयपुर में आयोजित तृतीय संगो-ठी की रिपोर्ट आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की। अशोक बाफना ने सापेक्ष अर्थशास्त्र के क्षेत्र में हुए विविध विकास कार्यों की अवगति दी। मुख्य नियोजिका साध्वीश्री विश्रुतविभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- आज अत्यधिक उपभोग की प्रवृत्ति के कारण संपूर्ण विश्व नाना प्रकार की समस्याओं से त्रस्त है। इस प्रवृत्ति के कारण ही पिछले व-ों में वैश्विक अर्थव्यवस्था में अत्यधिक उतार-चढाव आए, मंदी का दौर आया और लाखों लोग इससे प्रभावित हुए। इसलिए आवश्यकता इस बात कि है कि सापेक्ष अर्थशास्त्र के विभिन्न सूत्रों यथा इच्छा के संयम, आवश्यकता के संयम और मांग के संयम को वैश्विक स्तर पर क्रियान्वित किया जाए और अर्थशास्त्र को धर्मशास्त्र के साथ संबधित किया जाए। कार्यक्रम के अंत में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं ान्ति विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर बच्छराज दूगड़ ने आभार ज्ञापन किया। ज्ञातव्य है कि इस संगो-ठी में देश भर के प्रति-ठित अर्थशास्त्री एवं दार्शनिक एवं समाजशास्त्री भाग ले रहे हैं। दो दिवसीय इस कार्यक्रम में सापेक्ष अर्थशास्त्र के स्वरुप पर विचार-मंथन कर उसे यथार्थ जगत में उतारा जाएगा।